Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
दिनांक - 15 अप्रैल, 2024

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-10 'दो कलाकार' (कहानी) लेखिका - मन्नू भण्डारी

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर की पृष्ठ संख्या 64 पर दिए पाठ -10 'दो कलाकार' नामक कहानी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम मन्नू भण्डारी की कहानी 'दो कलाकार' पढ़ने जा रहे हैं इसलिए आप अपनी-अपनी पुस्तक साहित्य सागर निकाल लें और एक उत्तर-पुस्तिका भी साथ लेकर बैठें। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। प्रश्न इस कहानी से ही संबंधित होंगे। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोक देंगे। इन तीन मिनट में ही आपको उन प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। इसके लिए आपको अपना ध्यान इस ओर ही केन्द्रित रखना है। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो ! पिछले सप्ताह हमने जो पढ़ा था आइए, संक्षेप में जान लेते हैं।

चित्रा और अरुणा में गहरी दोस्ती थी। दोनों होस्टल के एक कमरे में रहती थीं। चित्रा भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्र बनाती है और अरुणा छोटे एवं गरीब बच्चों को मुफ़्त में पढ़ाती है और अन्य समाज सेवा के काम करती है।

एक दिन चित्रा ने एक चित्र बनाया और अरुणा को दिखाने ले गई। अरुणा को उसके बनाए चित्र में सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे के ऊपर चढ़ते दिखाई दे रहे थे। अरुणा ने उस चित्र को घनचक्कर का प्रतीक बताया। अरुणा चित्रा के बनाए चित्र को किसी भी प्रकार से समझ नहीं पा रही थी। उसके अनुसार चौरासी लाख योनियों में से चित्रा ने किस जीव का चित्र बनाया है। उसका इस चित्र को बनाने का क्या उद्देश्य है? चित्रा ने अरुणा को बताया कि यह चित्र आज की दुनिया में कन्फ्यूज़न का प्रतीक है। अरुणा ने चित्रा का मज़ाक उड़ाते हुए कहा कि यह चित्र तो तेरे दिमाग के कन्फ्यूज़न का प्रतीक है। ऐसा कहकर वह मुँह धोने चली गई। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे जो पास की बस्ती के चौकीदारों, नौकरों तथा चपरासियों के थे, पढ़ने के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। दूसरे दिन कॉलेज से लौटने में अरुणा को देर हो गई। जब वह आई तो दोनों ने चाय पी। अरुणा से चित्रा कहती है कि वह आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जा रही है। अरुणा को चित्रा की कला निरर्थक लगती है। अरुणा उसे रंग और तूलिकाओं में अपनी ज़िंदगी बरबाद न कर दो-चार ज़िंदगियों को सँवारने को कहती है। क्योंकि चित्रा धनी पिता की इकलौती संतान थी उसके पास सामर्थ्य और साधन दोनों थे।

बच्चो! अब हम पृष्ठ संख्या 66 से कहानी को समझने का प्रयास करते हैं। अरुणा, चित्रा को लोगों की मदद करने के लिए बार-बार कहती थी और चित्रा को इसमें कोई रुचि नहीं थी। चित्रा ने पलटवार करते हुए अरुणा से कहा कि यह काम तो मैंने तुम्हारे लिए छोड़ दिया है। मेरे विदेश जाने के बाद तुम सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना अर्थात् पूरे जोर-शोर से इस काम को करते रहना। इस प्रकार अपने-अपने काम को लेकर दोनों में नोक-झोंक होती रहती थी।

पिछले तीन दिन से मूसलाधार वर्षा हो रही थी।

बाढ़ की खबरें रोज़ अख़बारों में आती रहती थीं। बाढ़ पीड़ितों की दशा बिगड़ने की बात जान अरुणा उनके लिए चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती है। चित्रा ने उसे समझाया कि इम्तिहान आने वाले हैं। सारा दिन भटकने की जगह उसे पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए अन्यथा माता-पिता सोचेंगे कि तेरी पढ़ाई में बेकार पैसा खर्च किया।

चित्रा की बात को अनसुना कर अरुणा ने बताया कि आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल पंद्रह दिनों के लिए जा रहा है। वह भी प्रिंसिपल से अनुमति पाकर स्वयंसेवकों के साथ ज़रूरतमंदों की सहायता करने जा रही है।

शाम होते ही अरुणा चली गई। बाढ़ पीड़ितों की मदद करके जब अरुणा स्वयंसेवकों के साथ पंद्रह दिन बाद लौटी तो उसकी हालत खस्ता हो चुकी थी। उसकी सूरत देखकर ऐसा लगता था मानो वह छह महीने से बीमार हो। अरुणा अपने कमरे में नहा-धोकर, खा-पीकर जब लेटने लगी तभी उसकी नज़र चित्रा के बनाए चित्रों पर पड़ी। चित्रा ने बाढ़ के तीन चित्र बनाए थे। चित्रा द्वारा बनाए गए चित्रों को देख अरुणा के सामने उन्हीं बाढ़-पीड़ितों का दृश्य साकार हो गया जो वह स्वयं अपनी आँखों से देखकर आ रही थी। शाम के समय जब चित्रा अपने कमरे में लौटी तो वह अरुणा को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। उसने अरुणा को बताया कि अगले बुधवार वह अपने घर चली जाएगी और उसके एक सप्ताह बाद वह हिंदुस्तान की सीमा से बाहर विदेश में कदम रखेगी। विदेश जाने की बात सुनकर अरुणा उदास हो गई क्योंकि छह साल साथ रहते हुए वह यह बात भूल चुकी थी कि कभी अलग भी होना पड़ेगा। अतः चित्रा के बिना रहने की कल्पना मात्र से ही अरुणा उदास हो गई। इस प्रकार दोनों में इतना स्नेह था कि हॉस्टल वाले भी उनकी मित्रता देखकर ईर्ष्या करते थे।

जिस दिन चित्रा को जाना था, अरुणा सुबह से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। जाने से पहले

चित्रा अपने सब मित्रों से मिल आई बस गुरु जी से मिलना रह गया था इसलिए चित्रा अपने गुरु जी से मिलने एवं उनका आशीर्वाद लेने चली गई। उसकी गाड़ी पाँच बजे की थी। तीन बज गए थे लेकिन वह गुरु जी से आशीर्वाद लेकर नहीं लौटी। जब गाड़ी के चलने का समय नज़दीक आने लगा तो अरुणा को उसकी चिंता होने लगी। वह स्वयं ही जाकर देखने की सोचती है तभी चित्रा कमरे में प्रवेश करती है। वह बड़बड़ाते हुए अरुणा से कहती है क्या करूं, बस कुछ ऐसा हो गया कि मुझे रुकना पड़ गया। अरुणा के पूछने पर चित्रा ने उसे बताया कि गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे एक भिखारिन बैठी रहती थी। उसके दो बच्चे थे। जब वह गुरु जी से आशीर्वाद लेकर लौट रही थी तो उसने देखा कि वही भिखारिन पेड़ के नीचे मरी पड़ी थी। उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह से रो रहे थे। चित्रा ने अरुणा को बताया कि उस दृश्य में न जाने क्या था कि वह स्वयं को रोक न सकी। उसने मरी भिखारिन के शरीर से चिपककर रोते हुए बच्चों का एक रफ़ सा स्केच बना ही डाला इसलिए देर हो गई। चित्रा की सहेलियों ने चित्रा का सामान बाँधने में उसकी सहायता की साढ़े चार बजे चित्रा होस्टल के फाटक पर आ गई पर अरुणा वहाँ नहीं थी। उसकी सहेलियाँ चित्रा को छोड़ने स्टेशन तक भी गईं पर अरुणा न जाने कहाँ गायब थी। चित्रा की आँखें लगातार अरुणा को ढूँढ़ रही थीं। पाँच भी बज गए। रेलगाड़ी चल पड़ी पर अरुणा नहीं आई।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को पाँच मिनट के लिए रोक देंगे तथा उस दौरान आप उन प्रश्नों के उत्तर अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न 1. 'स्वयंसेवकों' का दल कहाँ जा रहा था तथा उनके साथ कौन गया था?

प्रश्न 2. किस बात से अरुणा उदास हो गई थी?

प्रश्न 3. चित्रा को कहाँ और क्यों जाना था और उसकी खुशी का क्या कारण था ?

प्रश्न 4. कौन-सा दृश्य देखकर चित्रा स्वयं को रोक नहीं पाई ?

बच्चो ! उत्तर लिखने के लिए दी गई विराम की अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा है कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। अब मैं आपको उन्हीं प्रश्नों के उत्तर बता रही हूँ, जो इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. स्वयंसेवकों का दल बाढ़-पीड़ितों की सहायता करने के लिए जा रहा था। उनके साथ अरुणा भी गई थी। क्योंकि अरुणा स्वभाव से ही समाज सेविका थी।

उत्तर 2. जब चित्रा ने अरुणा को बताया कि एक सप्ताह बाद वह विदेश चली जाएगी। विदेश जाने की बात सुनकर अरुणा उदास हो गई क्योंकि छह साल से साथ रहते हुए यह बात भूल चुकी थी कि कभी अलग भी होना पड़ेगा। चित्रा के बिना रहने की कल्पना मात्र से ही अरुणा उदास हो गई।

उत्तर 3. चित्रा को अपनी आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जाना था। चित्रा के पिता जी ने उसे विदेश जाने की अनुमति दे दी थी। अब वह आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जा रही थी, इसलिए उसे खुशी हो रही थी।

उत्तर 4. चित्रा ने रास्ते में भिखारिन के मृत शरीर से चिपककर रोते हुए उसके दोनों बच्चों को देखा तो उस दृश्य को देख चित्रा स्वयं को रोक नहीं सकी और उनका रफ-स्केच बनाने लग गई।

बच्चो ! आज हम अपने इस कार्य को यहीं विराम देते हैं। कहानी के शेष भाग को हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। आशा करती हूँ कि आज पढ़ाए गए पाठ को आपने भली प्रकार से समझ लिया होगा। आपने इस पाठ को पृष्ठ संख्या सड़सठ (67) तक दो-तीन बार ऊँचे स्वर में पढ़ना है। अब मैं आपको गृहकार्य देने जा रही हूँ

कक्षा - दसवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-10 'दो कलाकार') 15/04/2024

इस कार्य को आप अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो:-

" पर सच कहती हूँ मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती।"

प्रश्न (क) वक्ता को किसकी कला निरर्थक लगती है और क्यों?

प्रश्न (ख) वक्ता ने उसकी कला पर व्यंग्य करते हुए क्या कहा उसे क्या सलाह दी?

प्रश्न (ग) वक्ता की बात पर श्रोता ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की और क्यों?

प्रश्न (घ) आपके अनुसार सच्ची कला की क्या पहचान है?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]